संजय की कलम से ..

दीपावली का रहस्य

बड़े आश्चर्य की बात है कि दीपावली का त्योहार भारतवर्ष में बहुत ही महत्त्वपूर्ण त्योहार माना जाता है। इसे हम सभी भारतवासी हर वर्ष बड़ी ही धूमधाम से मनाते आये हैं। लेकिन हर वर्ष त्योहार मनाते हुए भी हम जिस बात की कामना रखते हैं कि हमारे घरों में लक्ष्मी आयेगी, जिसलिए हम अपने घरों की सफाई करते, दीपक जलाते तथा पूजन कर लक्ष्मी का आह्वान करते हैं। परन्तु इतना नहीं समझते कि एक तरफ तो लक्ष्मी का वाहन उल्लू दिखाया जाता है और दूसरी तरफ दीपक जलाकर लक्ष्मी का आह्वान करते हैं परंतु विचार करने की बात है कि जब उल्लू को रोशनी में कुछ दिखाई ही नहीं देता तो लक्ष्मी आएगी कैसे?

अब परमपिता परमात्मा शिव हम सभी को दीपावली का सच्चा-सच्चा रहस्य समझाते हैं कि हे वत्सो! तुम द्वापर से लेकर हर वर्ष दीपावली मनाते आये हो। लेकिन बजाय संपन्न होने के और ही कंगाल होते आये हो। परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं, बच्चो, घरों की सफाई करना या दीपक आदि जलाना तो साधारण सी बात है। कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के बीच के वर्तमान कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर यदि वास्तविक लक्ष्मी को बुलाना चाहते हो या श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के राज्य की स्थापना करना चाहते हो तो तुम्हें लक्ष्मी के समान दैवी गुण अपने जीवन में धारण करने होंगे। इसी के लिए परमपिता परमात्मा हमें समझाते हैं कि हे वत्सो, तुम्हारी आत्मा में 63 जन्मों से पाँच विकारों रूपी मैल चढ़ा हुआ है। जब तक तुम बच्चे अपने आत्मा रूपी घरों से इन पाँच विकारों रूपी मैल को नहीं निकालते अर्थात् जब तक आत्मा को ज्ञान प्रकाश नहीं मिलता तब तक श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का राज्य स्थापन नहीं हो सकता और सही अर्थों में दीपावली नहीं हो सकती है।

'दीपावली' शब्द का अर्थ है दीपों की अवली (पंक्ति)। इस पर्व पर लक्ष्मी के आह्वान के लिए दीप जलाकर खूब रोशनी की जाती है। दीपक के स्थिरतापूर्वक जगने के लिए उसमें निरंतर घी या तेल का होना ज़रूरी है। इसी प्रकार मनुष्यात्मा की आत्मिक ज्योति जगते रहने के लिए भी उसमें ईश्वरीय ज्ञान का निरंतर बने रहना ज़रूरी है। जब बुझा हुआ दीपक किसी जगे हुए दीपक के संपर्क में आता है तो वह भी जग उठता है। ठीक इसी तरह ही आत्मा भी सदा जागती-ज्योति परमपिता परमात्मा के संपर्क में आने से जग जाती है।

(शेष ..पृष्ठ 5 पर)

अमृत-सूची

- श्वासों की सफलता *(सम्पादकीय)* 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के..6
- ब्रह्माकुमारी ऊषा जी के साथ पवित्रता संपन्न जीवन 8
- गृहस्थ में रहते मुक्ति 12
- तुलना न कर देवतुल्य बनें 14
- सूचना 16
- विश्व का अनोखा दरबार 16
- जीभ पर बन्धन..... 17
- मैं डिप्रेशन से बाहर आ गया .20
- भगवान का आदेश 21
- मुझे साथी मिल गया.....23
- भक्ति पूरी हुई 24
- चश्मा पहनो, चमत्कार देखो .27
- पवित्रता का उपहार *(कविता)* 29
- सचित्र सेवा समाचार..... 30
- क्रोध पर विजय 32
- ग्लोबल हॉस्पिटल में.....34

नये सदस्यता शुल्क

	वार्षिक	आजीवन
भारत		
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	750 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	750/-	8,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383